ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 186-188
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

बलिया जनपद (उ0प्र0) में जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना एवं विकास पर उसका प्रभाव

डॉ0 अशोक कुमार सिंह
एसोषिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष– भूगोल विभाग, कुँवर सिंह पी0 जी0 कालेज, बलिया (उ0प्र0), भारत

Received- 09.11.2018, Revised- 16.11.2018, Accepted - 20.11.2018 E-mail: ashokkspg1965@gmail.com

सारांश : ***किसी क्षेत्र के विकास में वहाँ की जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना का विशेष महत्व होता है। व्यावसायिक संरचना के माध्यम से किसी भी क्षेत्र के विविध पक्षों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना क्षेत्र की सामाजिक परिस्थितियों, आर्थिक दशाओं एवं अन्य सांस्कृतिक दशाओं की पृष्ठभूमि है। जनांकिकीय मूल्यों को स्थापित करने वाले कारकों में व्यावसायिक संचरना विशेष प्रभावकारी होता है। जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना के अध्ययन से ही किसी क्षेत्र की कुल जनसंख्या में कार्यरत जनशक्ति एवं पराश्रितों का अनुपात ज्ञात होने के साथ ही कार्य विशेष में संलग्न जनसंख्या की सापेक्षिक स्थिति भी ज्ञात हो जाती है जिससे क्षेत्र के विकास के स्तर का बोध होता है। जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना द्वारा संसाधनों पर जनसंख्या के दबाव का भी आंकलन किया जा सकता है जिससे क्षेत्र विशेष के आर्थिक विकास की सम्भावित स्थिति का भी आकलन सम्भव हो सकेगा। यह किसी क्षेत्र में निवास करने वाली जनसंख्या के जीवन स्तर के अध्ययन में भी सहायक सिद्ध होता है। तीव्र गति से बढ़ती हुयी जनसंख्या, संसाधनों पर बढ़ते दबाव, विकास का स्तर आदि के अध्ययन हेतु इस प्रकार का अध्ययन अत्यन्त ही उपयोगी सिद्ध होता है।***[1]

कुंजीभूत शब्द– व्यावसायिक संरचना, सामाजिक परिस्थितियों, आर्थिक दशाओं, सांस्कृतिक दशाओं ।

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ कि 70 से 80 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्यों में ही संलग्न है। यहाँ का मूल व्यवसाय भी कृषि ही है। इसीलिये कृषि कार्यों में संलग्न जनसंख्या का प्रतिशत अधिक है साथ ही कृषि आधारित उद्योगों की भी अधिकता है। यह भारत में विकास का मूल आधार है क्योंकि समस्त आर्थिक एवं व्यावसायिक गतिविधियों का संचालन भी इसी के माध्यम से सुनिशिचित होता है। व्यावसायिक संरचना जनसंख्या सम्बन्धी अध्ययन का एक ऐसा पक्ष है जिसके माध्यम से संसाधनों पर जनसंख्या के बढ़ते दबाव का आकलन भी भली प्रकार से किया जा सकता है। साथ ही जनसंख्या वृद्धि, लैंगिक असमानता, साक्षरता, औद्योगीकरण, परिवहन, संचार, शिक्षा, चिकित्सा, जीवन स्तर आदि सुविधाओं का आकलन भी इसके माध्यम से किया जा सकता है। किसी क्षेत्र का क्षेत्रीय विकास वहाँ की जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना पर ही निर्भर करता है। इसी लिये वर्तमान के संदर्भ में किसी क्षेत्र की व्यावसायिक संरचना का अध्ययन अतिमहत्वपूर्ण हो जाता है जिसके माध्यम से वहाँ निवास करने वाली जनसंख्या के विविध पक्षों का अध्ययन सुगमतापूर्वक किया जा सकता है।[2]

अध्ययन का उद्देश्य– प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बलिया जनपद (उ0प्र0) में जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना एवं विकास पर पड़ने वाले उनके प्रभावों का अध्ययन करना है जिसके माध्यम से जनपद में विकास में आने वाली बाधाओं को दूर किया जा सके एवं उसके आधार पर विकास हेतु नियोजन प्रस्तुत किया जा सके।

विधि तन्त्र– प्रस्तुत अध्ययन में विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विविध तन्त्रों का प्रयोग करते हुये अध्ययन को पूर्णता प्रदान की गयी है। साथ अध्ययन के निष्कर्ष को प्राप्त करने के लिये आंकड़ों का संकलन, सारणीयन, विश्लेषण को आधार बनाया गया है जिसके आधार पर निष्कर्ष को प्राप्त करते हुये विकास हेतु नियोजन प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र– बलिया जनपद उत्तर प्रदेश के पूर्वान्चल में आजमगढ़ मण्डल के अन्तर्गत निचले गंगा घाघरा दोआब में 25023' उत्तरी अक्षांश से 26011' उत्तरी अक्षांश एवं 83035' पूर्वी देशान्तर से 84039' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इस जनपद का कुल विस्तार 1368 वर्ग किमी0 क्षेत्रफल पर है। इसकी पूरब पश्चिम लम्बाई 115 किमी0 एवं पष्चिम में अधिकतम चौड़ाई 42 किमी0 है जो पूरब में मात्र 1 किमी0 रह जाती है। इस तरह जनपद का स्वरूप लगभग त्रिभुजाकार है जिसकी उत्तरी सीमा पर घाघरा नदी, दक्षिणी सीमा पर गंगा नदी एवं पश्चिमी सीमा के कुछ भागों पर छोटी सरयू (टोंस) नदी प्रवाहित होती है। इन नदियों के कारण इस जनपद की सीमा रेखा काफी टेढ़ी–मेढ़ी हो गयी है। क्योंकि जनपद का सीमांकन प्रायः नदियों की धारा के आधार पर ही हुआ है।[3]

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

बलिया जनपद के उत्तरी पूर्वी भाग एवं दक्षिणी पूर्वी भाग पर बिहार राज्य के क्रमशः सीवान, सारन तथा भोजपुर एवं बक्सर की सीमायें मिलती हैं, जबकि उत्तरी पश्चिमी भाग पर क्रमशः देवरिया एवं गाजीपुर तथा मऊ (उत्तर प्रदेश) जनपद की सीमायें मिलती हैं।

प्रशासनिक दृष्टि से बलिया जनपद को छः तहसीलों (बलिया, रसड़ा, बांसडीह, बैरिया, बेल्थरारोड एवं सिकन्दरपुर), 17 विकासखण्डों, 158 न्यायपंचायतों एवं 820 ग्रामसभाओं में विभक्त किया गया है। जनपद में कुल गांवों की संख्या 2331 (1791 आबाद एवं 548 गैरआबाद) एवं नगरीय केन्द्रों की संख्या 9 है।[4]

विश्लेषण एवं व्याख्या– अध्ययन क्षेत्र एक कृषि प्रधान क्षेत्र है जिसके कारण यहाँ कि अधिकाधिक जनसख्या के जीवन का मुख्य आधार कृषि ही है। सारणी संख्या 1 के माध्यम से यहाँ की व्यावसायिक जनसंख्या को स्पष्ट किया गया है।

तालिका संख्या–1

बलिया जनपद : जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना

क्रम संख्या	व्यवसाय	कुल व्यवसायिक जनसंख्या में प्रतिशत
1	कृषक	42.7
2	कृषि श्रमिक	35.2
3	पशु चालन, जंगल लगाना, वृक्षारोपण	0.50
4	खान खोदना	0.10
5	पारिवारिक उद्योग	2.10
6	गैरपारिवारिक उद्योग	2.70
7	निर्माण कार्य	0.80
8	व्यापार एवं वाणिज्य	7.32
9	यातायात एवं संचार	2.32
10	अन्य	6.26

स्रोत– सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद बलिया

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि कृषि कार्य की प्रधानता होने के कारण यहाँ लगभग 79.1 प्रतिशत जनसंख्या (कृषक एवं कृषि श्रमिक सम्मिलित कर) कृषि कार्य में संलग्न है। औद्योगिक क्षेत्र में कार्य करने वाली जनसंख्या का प्रतिशत अति न्यून है। साथ ही साथ अन्य क्षेत्रों में कार्यरत जनसंख्या का प्रतिशत भी अल्प है।

तालिका संख्या–2

बलिया जनपद : प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक कार्यों में संलग्न जनसंख्या (प्रतिशत में)

क्रम संख्या	व्यवस्था	ग्रामीण	नगरीय	योग
1	प्राथमिक	84.13	36.12	79.89
2	द्वितीय	3.26	12.26	4.05
3	तृतीय	12.62	51.62	16.06

स्रोत– सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद बलिया

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है कि प्राथमिक कार्यों में लगी जनसंख्या का प्रतिशत सर्वाधिक है जबकि द्वितीयक एवं तृतीयक कार्यों में संलग्न जनसंख्या का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम है।

तालिका संख्या–3

बलिया जनपद : विकासखण्डवार प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक कार्यों में संलग्न जनसंख्या (प्रतिशत में)

क्रम संख्या	विकासखण्ड	प्राथमिक व्यवसाय	द्वितीयक व्यवसाय	तृतीयक व्यवसाय
1	गड़वार	77.35	5.88	16.77
2	हनुमानगंज	72.31	7.63	20.26
3	दुबहड़	79.21	3.81	16.98
4	बेलहरी	79.86	3.56	16.58
5	बैरिया	83.74	3.17	13.09
6	मुरलीछपरा	89.10	2.33	8.57
7	सोहांव	84.69	4.20	11.21
8	रेवती	89.04	2.83	08.13
9	बांसडीह	87.28	3.00	9.72
10	मनियर	90.96	1.95	7.09
11	पन्दह	83.66	3.91	12.43
12	नवानगर	86.01	3.00	9.72
13	बेरुआरबारी	80.12	3.84	16.04
14	रसड़ा	82.59	4.80	12.61
15	चिलकहर	85.55	3.44	11.01
16	नगरा	85.06	2.91	11.43
17	सीयर	13.08	3.79	13.13

स्रोत– सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद बलिया

व्यावसायिक संरचना के दिये गये आंकड़ों से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि पर जनभार अत्यधिक है। भूमिहीन, कृषक मजदूरों में बेरोजगारी के कारण इनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। रूढ़िवादिता, जन्म भूमि के प्रति लगाव एवं अन्य सामाजिक, सांस्कृतिक कारणों से काम न करने वाले एवं अल्प कार्य या मौसमी कार्यों में संलग्न रहने वाले लोगों का प्रतिषत अधिक है।

प्राथमिक व्यवसाय एक ओर जहाँ कृषि में संलग्न जनसंख्या एवं उससे सम्बन्धित उद्योगों में संलग्न जनसंख्या को इंगित करते हैं वही द्वितीयक एवं तृतीयक व्यवसाय सामाजिक आर्थिक सुसम्पन्नता के द्योतक होते हैं।

व्यावसायिक संरचना का विकास पर प्रभाव– भूमिहीन, कृषिक मजदूरों में बेरोजगारी के कारण इनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है जो अध्ययन क्षेत्र के विकास में बाधक है। रोजगार के साधनों की अनुपलब्धता के कारण कृषिगत संसाधनों पर जनसंख्या का दबाब अधिक बढ़ता जा रहा है। तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण उपलब्ध संसाधनों पर जनभार अधिक बढ़ता जा रहा है जिसके कारण असंतुलन की स्थिति पैदा होती जा रही है। बेरोगारी एवं भूखमरी की समस्या भी दिनोदिन बढती जा रही है जिससे कि समाज में विविध

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

प्रकार की समस्यायें उत्पन्न हो रही है। प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक व्यवसायों में संलग्न जनसंख्या के सही अनुपात में वितरण नहीं हो पाने के कारण असमानता की स्थित उत्पन्न हो रही है जिससे कि क्षेत्र का विकास प्रभावित हो रहा है। कृषि के अतिरिक्त अन्य उद्योगों की अनुपलब्धता के कारण यहाँ की जनसंख्या पलायन हेतु मजबूर हो रही है जिससे कि विविध समस्यायें उत्पन्न हो रहीं है।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक व्यवसाय में संलग्न जनसंख्या के अनुपात को ठीक किया जाय साथ कृषि के अतिरिक्त अन्य उद्योगों के विस्तार पर बल लिया जाय, जीवन निर्वाहक कृषि के स्थान पर व्यावसायिक कृषि को प्रोत्साहित किया जाय जिससे कि कृषि के स्वरूप को परिवर्तित किया जा सके। कौशल विकास केन्द्रों के माध्यम से यहाँ निवास करने वाली जनसंख्या को विविध प्रकार के प्रशिक्षण के माध्यम से आत्म निर्भर बनाया जाय जिससे कि यहाँ अध्ययन क्षेत्र का विकास सुनिश्चित किया जा सके। कृषि पर आधारित उद्योगों को प्रोत्साहित करने हेतु किसानों को ऋण उपलब्ध कराया जाय साथ यातायात एवं परिवहन के साधनों का विस्तार किया जाय जिससे कि आवागमन में सुगमता हो सके एवं अध्ययन क्षेत्र का विकास सम्भव हो सके।

अध्ययन क्षेत्र को बाढ़ के दिनों में व्यापक जन धन की हानि होती है। कृषि कार्य में भी बाधा उत्पन्न होती है जिसके कारण आम जनसंख्या को विविध प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसलिये बाढ़ को नियंत्रित करते हुये कृषि कार्यों संलग्न जनसंख्या को प्रोत्साहित किया जाय जिससे कि अध्ययन क्षेत्र का विकास हो सके। कृषि पर आधारित उद्योगों, कुटीर उद्योगों आदि का विकास किया जाय साथ प्रशिक्षण के माध्यम से यहाँ की जनसंख्या को रोजगारपरक बनाया जाय जिससे कि जनसंख्या स्वावलम्बी हो सके एवं इनका विकास सुनिश्चित किया जा सके।

निषकर्ष– आंकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में कृषिगत संसाधनों पर जनसंख्या का दबाव बहुत अधिक है। औद्योगिक विकास अत्यल्प हुआ है जिससे कि यहाँ कि जनसंख्या का जीवन स्तर अत्यन्त ही न्यून है। इसलिये जनसंख्या को नियंत्रित करते हुये अन्य संसाधनों के विकास पर बल दिया जाय, यहाँ निवास करने वाली जनसंख्या को रोजगारपरक बनाया जाय जिससे कि अध्ययन क्षेत्र का विकास हो सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. उपाध्याय, अशोक कुमार, 1999, बलिया के सामाजिक, आर्थिक विकास पर व्यावसायिक संरचना का प्रभाव, पूर्वान्चल भूगोल पत्रिका, अंक 5, पूर्वान्चल भूगोल परिषद, जौनपुर, पृ0 12.
2. उपाध्याय, अशोक कुमार, 1999, दी पैटर्न आफ पापुलेशन इन बलिया डिस्ट्रिक्ट, उत्तर प्रदेश ज्योग्राफिकल जर्नल, अंक 4, दी ब्रम्हावर्त ज्योग्राफिकल सोसाईटी आफ इण्डिया, कानपुर।
3. सिंह, मंगला, 1981, आजमगढ़ जनपद में ग्रामीण अधिष्ठान रूपान्तरण, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
4. तिवारी, ब्रजेश, 2003, जनसंख्या, पर्यावरण एवं विकास : जनपद मऊ (उ0प्र0) का एक भौगोलिक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर।

*****